स्वामी मुक्तानन्द के वचनों पर ध्यान

ईस्टर के उपलक्ष्य में सिद्धयोग सत्संग

ईशा सरदेसाई द्वारा लिखित

जीवन मिला, इसके लिए कृतज्ञता

ईस्टर के उपलक्ष्य में हुए सिद्धयोग सत्संग के दौरान, 'चित्‌शक्ति विलास' ग्रन्थ से जो उद्धरण पढ़ा गया, उसमें बाबा मुक्तानन्द उन महात्मा जी की कहानी सुनाते हैं जिनका अन्त समय निकट था। उद्धरण के आरम्भ में बाबा जी लिखते हैं :

> महात्मा जी को कालज्ञान द्वारा अपने अन्त समय का पता लग गया था। जाने के समय वे सभी से मिले और सभी से उन्होंने आशीर्वाद माँगा, सभी से क्षमा माँगी। सभी उपस्थित जनों को धन्यवाद दिया। तदनन्तर सब दिशाओं को, पंचमहाभूतों को और विद्यादाता गुरु को नमस्कार [किया] . . .।[१]

इस वृत्तान्त ने मेरे मन को छू लिया। मुझे लगता है कि जब महात्मा जी को पता चला कि उनका अन्त समय निकट है तो वे जो करने का निर्णय लेते हैं, उससे हम महात्मा जी के बारे में और उन्होंने अपना जीवन कैसे जिया इस विषय में बहुत कुछ जान सकते हैं। वे अपने भाग्य का रोना नहीं रोते, न ही वे इस धरती से विदा होने से पहले जो कुछ भी देख व सुन सकें, उसकी आपाधापी में समय के साथ होड़ लगाते हैं। वे अपने अन्तिम क्षणों का उपयोग कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए करते हैं। मेरे लिए यह इस बात का संकेत है कि उन महात्मा जी को सच्ची व स्थायी अन्तर-तृप्ति की प्राप्ति हो गई थी और वे अपने जीवन से सन्तुष्ट थे। यह उनके अत्यन्त विनम्रभाव को भी दर्शाता है।

न जाने क्यों, मुझे इस बात पर संशय है कि इन महात्मा जी का जीवन 'हमेशा ही अच्छा व खुशहाल' रहा होगा। यदि आपने सन्तजनों की जीवनियों को पढ़ा हो, चाहे वे किसी भी परम्परा के क्यों न रहे हों तो आपको यह पता होगा कि ऐसा होना लगभग असम्भव है। 'चित्‌शक्ति विलास' में बाबा जी यह

बताते हैं कि पूरे भारत में अपने भ्रमणकाल के दौरान वे जितने भी सन्तों से मिले, उनमें से अनेक के पास बाहरी सम्पत्ति के नाम पर बहुत कम वस्तुएँ होतीं। उदाहरण के लिए, बाबा जी बताते हैं कि महान सिद्ध ज़िप्रुअण्णा "गिरे हुए मकान या टूटी-फूटी झोंपड़ी में, गाँव के जनों से दूर . . . रहा करते थे।"[२] महान सिद्ध, हरिगिरि बाबा पूर्ण सर्वज्ञ थे। वे तरह-तरह के अच्छे-अच्छे वस्त्र व जूते पहनते, फिर भी नदी किनारे फिरते हुए अपने दिन बिताते। जब भी भूख लगती तो वहीं आस-पास किसी से भी, खाने को कुछ दे दो कहकर खाना माँग लेते।[३]

इस उद्धरण में बाबा जी जिन महात्मा जी के बारे में बताते हैं, उन्हें इस संसार यानी इस भवसागर में एक मनुष्य भर होने के नाते अनेक कठिनाइयों का सामना तो करना ही पड़ा होगा। कहने का तात्पर्य यह है कि उन सांसारिक कठिनाइयों के साथ-साथ, उनके अपने जीवन के विशिष्ट मार्ग से जुड़ी जो अन्य चुनौतियाँ आई होंगी, उनके बारे में तो कहना ही क्या। तथापि, उनके शब्दों में न ही कोई नाराज़गी दिखती है, और न ही अधिकार जताने का लेशमात्र भाव ही दिखता है।

हम इससे सीख सकते हैं। मेरा मानना है कि जब हम जीवन से अपनी माँगें छोड़ देते हैं, यह अपेक्षा करना बन्द कर देते हैं कि जीवन किसी विशेष प्रकार का दिखे या महसूस हो तो संसार जो प्रचुरता हमें प्रदान कर रहा है, उसे हम और भी बेहतर रूप से अनुभव कर सकते हैं। हम इस ब्रह्माण्ड के पदार्थ से, इसके तत्त्वों के विशिष्ट संयोजन से उत्पन्न हुए हैं। अन्ततः, हम इन्हीं तत्त्वों में पुनः विलीन हो जाएँगे। इस उत्पत्ति और विलय के बीच जो कुछ भी होता है, उसे हम अगर एक उपहार समझें तो क्या हो?—यानी, यदि हम इस अद्भुत व जटिल जीवन को, इसके समस्त उतार-चढ़ावों को एक उपहार के रूप में समझें तो? हम इसे न किसी वायदे के रूप में, न जीवन जीने की क़ीमत के भुगतान के रूप में देखें, बल्कि एक अवसर के रूप में देखें तो? ईस्टर के उपलक्ष्य में हुए सत्संग के बाद से मैं इसी बात पर मनन करती रही हूँ—और हाल ही में सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर पोस्ट की गई, बाबा जी द्वारा सुनाई गई कहानी 'मानव-जीवन का मूल्य' को दोबारा पढ़ने के बाद से तो मैं इस पर अधिक गहराई से मनन कर रही हूँ।

अपनी पुस्तक *Courage and Contentment* [करेज ऐण्ड कण्टेण्टमेण्ट] में गुरुमाई जी पूछती हैं, "तुम धरती पर हलके क़दमों से चलते हो या भारी क़दमों से?"[४] मैं इस प्रश्न पर अकसर विचार करती हूँ। और यह मुझे खुद से व आपसे *और भी* प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करता है।

आप कृतज्ञता व्यक्त करने का अभ्यास किस प्रकार करते हैं—लोगों के प्रति, स्थानों के, परिस्थितियों के और अपने जीवन में छोटी-बड़ी चीज़ों के प्रति? क्या आपने वसन्त के उमंगोत्साह को अपने श्वास में भरने के लिए समय निकाला है—ताकि आपकी समस्त कोशिकाएँ इस उत्कृष्ट ऋतु की चैतन्यताभरी सुगन्ध से सराबोर हो सकें?

© २०२६ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

[१] स्वामी मुक्तानन्द, *चित्शक्ति विलास : एक आध्यात्मिक आत्मकथा* [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०२२] पृ. २५२।

[२] स्वामी मुक्तानन्द, *चित्शक्ति विलास* पृ. ११३।

[३] स्वामी मुक्तानन्द, *चित्शक्ति विलास* पृ. १०२।

[४] गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *Courage and Contentment: A Collection of Talks on Spiritual Life* [साउथ फ़ॉल्सबर्ग, न्यूयॉर्क : एस. वाय. डी. ए. फ़ाउण्डेशन, १९९९], पृ. ४।